अरस्तु का अनुकरण सिद्धांत

- डॉ.पूजा (सा.आ.)

हिंदी विभाग

जैन कन्या पाठशाला (पी. जी.) कॉलेज

मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

अरस्तू का जीवन वृत

अरस्तु (३८४ ई. पू. ३२३ ई.पू.) प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक प्लेटो का शिष्य था पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में अरस्तु का महान योगदान है वह सिकंदर महान के गुरु के रूप में विख्यात है ।अरस्तू ने विविध विषयों पर लगभग 400 ग्रंथों की रचना की उनके साहित्य संबंधी विचारों का आधार उनके लिखे दो ग्रंथ है –काव्यशास्त्र और भाषण शास्त्र।

अरस्तु द्वारा अनुकरण शब्द का प्रयोग –प्रोफेसर ब्रूचर के अनुसार अरस्तु के द्वारा प्रयुक्त अनुकरण का अर्थ है सादृश्य विधान के द्वारा मूल वस्तु का पुनर आख्यान ।

प्रोफ़ेसर मरे ने बताया है अनुकरण का अर्थ सर्जना का अभाव नहीं अपितु पुनः सर्जना है।

अरस्तू ने काव्य को सोन्दर्यवादीदृष्टि से देखा और इसे दार्शनिक राजनीतिक एवं नीति शास्त्र के बंधन से मुक्त किया अरस्तु के अनुसार कला प्रकृति की अनुकृति है।

अरस्तु ने हूबहू नकल को अनुकरण नहीं माना है उनके अनुसार “**प्रकृति के अनेक दोष और अभाव भी अनुकृति की प्रक्रिया से कला द्वारा पूरे किए जाते हैं ।**

- अरस्तू का यह भी मानना है कि काव्य स्वादन का रहस्य भी मनुष्य की अनुकरण की प्रवर्ती में निहित है :

"अनुकृति वस्तु से प्राप्त आनंद भी कम सार्वभौम नहीं है ।अनुभव इसका प्रमाण है । जिन वस्तुओ के प्रत्यक्ष दर्शन से हमें क्लेश होता है उनकी यथावत प्रतिक्रृति को देख कर हम प्रसन्नता का अनुभव करते है ।"

वस्तुतः कलाजन्य आनंद अनुकृतिजन्य आनंद ही है।

अनुकरण की प्रक्रिया – अरस्तु के अनुसार कवि वस्तुओं को यथा स्थिति रूप में वर्णित नहीं करता अपितु उनके युक्ति युक्त संभाव्य रूप में वर्णित करता है इस प्रकार की मानव जीवन के स्थाई तत्व की अभिव्यक्ति के लिए वस्तु के सत्य का बलिदान भी कर सकता है और उसमें परिवर्तन भी कर सकता है।

अरस्तु के अनुकरण सिद्धांत के महत्वपूर्ण बिंदु निम्नलिखित है

१. कविता जगत की अनुकृति है तथा अनुकरण मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है ।

२ अनुकरण से हमें शिक्षा मिलती है बालक अपने से बड़ों की क्रियाएं देकर तथा उसका अनुकरण करके ही सीखता है ।

३. अनुकरण की प्रक्रिया आनंददायक है हम अनुकृति वस्तुओं से मूल का सादृश्य देखकर आनंद प्राप्त करते हैं।

४. अनुकरण के माध्यम से भयमूलक वस्तुओं को भी इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है जिससे आनंद की प्राप्ति हो ।

५. काव्य कला सर्वोच्च अनुकरणात्मक कला है तथा अन्य सभी ललित कलाओं एवं उपयोगी कलाओं से अधिक महत्वपूर्ण है नाटक काव्य कला का सर्वाधिक उत्कृष्ट रूप है।

६. अरस्तू ने काव्य की समीक्षा स्वतंत्र रूप से की है प्लेटो की भांति दर्शन राजनीति के चश्मे से उसे नहीं देखा।

अरस्तू काव्य को प्रकर्टी का अनुकरण में के चलते है इसलिए डॉ० नागेन्द्र के अनुसार अरस्तू का दर्ष्टिकोण अभावात्मक रहा है और त्रासऔर करुणा का विवेचन उसकी चरमसिद्धी रही हैं

अरस्तु ने कवि की निर्माण क्षमता पर बल दिया है पर जीवन के विभिन्न अनुभवों से निर्मित कवि की अंतस चेतना को महत्व प्रदान नहीं किया उसके सिद्धांत में एक कमी यह भी है कि वह आंतरिक अनुभूतियों के भी अनुकरण की बात करता है अनुकरण का इतना विस्तार नहीं हो सकता बस यह उसके सिद्धांत की सीमा है।अरस्तू ने अनुकरण को नया अर्थ प्रदान करते हुए कला का स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित किया कला को संवेदना एवं बिंब विधायिनी शक्ति से संपन्न तथा कलागत सौंदर्य को शिवत्व से अधिक महत्व प्रदान किया प्लेटो द्वारा कला पर पवित्रता को दूषित करने का जो आरोप लगाया गया था उसे अरस्तु ने स्वीकार नहीं किया ।यही नहीं अपितु उसने काव्य को दर्शन एवं नीति के चंगुल से मुक्ति दिलाई।

- **निष्कर्ष –** अरस्तु के अनुसार अनुकरण का विषय जीवन का वाहय पक्ष नहीं हैअपितु इसका प्रभाव क्षेत्र अंतर जगत तक व्याप्त है ।अरस्तू काव्य के लिए वस्तु कैसी है की अपेक्षा वस्तु कैसी होनी चाहिए पर अधिक बल देते हैं।